* ओ३म् *

छोटी जनेऊका विवाह

लेखक—

पण्डित रुद्रदत्त शर्मा सम्पादकाचार्य

प्रकाशक—

पं० शङ्करदत्त शर्मा

वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद ।

नेमीचन्द जैन के प्रबन्ध से

शर्मा मैशीन प्रिन्टिङ्ग प्रेस मुरादाबाद में छपा.

तृतीयवार	माघ	मूल्य
१०००	संवत् १९८१	-) आना

॥ ओ३म् ॥

भूमिका ॥

आजकल भारतवर्षीय धर्मसम्प्रदायों में अनेक प्रकार के ढकोसले चलरहे हैं यद्यपि उनका कुछ भी सिर पैर नहीं है तो भी अनेक लोग उनको धर्म समझ के करते हैं, अधिक आश्चर्य यह है कि वर्त्तमान हिन्दू समाज के संशोधन का भार जिन पण्डितों के शिर पर अर्पित है वह स्वयम् उन अविवेकजन्य ढकोसलों में फंसे हुए हैं, इन ढकोसलोंमें से तुलसी और शालिग्राम जी का विवाह भी एक ढकोसला है, बस मैंने उस विवाह का मिथ्यात्व और बालक्रीडन सिद्ध करने के निमित ही "कण्ठी और जनेऊ का विवाह" लिखा है।

इस छोटे से पुस्तक को हिन्दूलोग धर्मग्रन्थ समझ कर अवश्य पढ़ें क्योंकि इस के पढ़ने से मूर्त्तिपूजकों की परम पूजनीय तुलसी में जो वन्ध्यापन का दोष लगा था वह दूर होजायगा। (लेखक)

कण्ठी जनेऊ का विवाह।

भादों की चन्द्र दुःख कारी, अँधियारी रात्रि मे देव मनमानी इन्द्र की राजधानी अमरावती में सम्पूर्ण सती सुकुमारी देवनारी श्री व्रजचन्द्र आनन्दकन्द नन्द नन्दन का जन्मोत्सव मनाने के वास्ते एकत्रित हुईं, परस्पर अनेक प्रकार के हास विलास होते होते श्रीमती महारानी इन्द्रानी ने विष्णु प्रिया लक्ष्मीजी से हँसते हँसते कहा क्यों बहिन! तुम तो रातदिन सौतिया—डाह से ही दग्ध रहती हो फिर तुमको जगत् के मनुष्य रत्नरवनी सुखधनी क्यों मानते है? श्री सावित्री देवी बोल उठीं अजी! इन के भक्त भी ऐसे ही रसीले होते हैं कि इनकी गुप्तलीलाओं को खुले बाज़ार पुकार २ गाते हैं और यह भी ऐसी भक्तवत्सला हैं कि उन पर रीझ ही पड़ती हैं, क्यों न हो इस ही में तो इनके पति को इन के भक्त गाली दिया करते हैं, गीतगोविन्द में लिखा है (बहिरिव मलिनतरन्तव कृष्ण मनोऽपि भविष्यति नूनम्, यद्वा, नायातस्सखिनिर्दयोयदि शठस्त्वं दूति किन्दूयसे; अथवा सूरश्यामको कहा परेखो बाप किया जिन और) श्री भोलानाथ की प्राणप्यारी शैलकुमारी पार्वती मुसकुराकर बोलीं बहिन! कहना तो सत्य हो मैंने भी अपने एक भक्त के घर इस ही श्रावण मास की शुक्ला एकादशी के मित्रविलास में इनकी ऐसी ही लीला पढ़ी थी, क्या कहूं बहिन! मैं अपने

पुत्र समान भक्त के सम्मुख उस निस्त्रपपत्र को देख के अपने मन में बड़ी लज्जित हुई भला अपनी प्यारी सखी की ऐसी बातें सुनके किसे लज्जा नहीं आती? पार्वती की बात को सुन महारानी इन्द्राणी फिर मुसकुरा के बोली क्यों बहिन! उस त्रपाहीन पत्र में ऐसी क्या बात लिखी थी जिस से तुमको लज्जित होना पड़ा ज़रा मुझे भी तो सुना दो। श्रीमती पर्वतसुता ने कहा बहिन! क्या कहूं मुझे तो उन वचनों को पढ़ते भी लज्जा आती है उस में "प्रार्थना" शीर्षक लिख के नीचे यह पद लिखे थे।

मलार–भीजत साँवरेके सङ्ग गोरी अरस परस बानन रस
  भूली बांह बाह। में जोरी। कदम तरे ठाढ़े दोउ
  ओढ़े एकहि पीत पिछोरी। चुवत रङ्ग अङ्ग वसन
  लिपट रहे भीज भीज दोऊ ओरी। अलकन स्रवत-
  सकृपगि पलकन करत जुगल चित चोरी। गावत-
  हँसत रिझावत खिलमिल पुनि पुनि भरत अंकोरी॥

इन्द्राणी ने फिर भौंह चढ़ा के कहा दूर! दूर! बज्र पड़ो ऐसी प्रार्थना पै जिस में ऐसी २ रहस्य की बातें कही जाती हैं-

इन सब की ठठोली को सुन के श्री विष्णुप्रिया लक्ष्मी कुछ नीची आंख करके बोलीं बहिन! तुम सब सुशीला और लज्जावती हो इसी से अपने पतियों की बात को पेट में छिपा के रखती हो, बेचारे गोतम के घर को घाल के आप कलङ्की बनना सहस्राक्ष की कीर्ति को बढ़ाता है क्योंकि वह देवतों के राजा हैं उन

की बात कौन कह सकता है और शैलविहारी त्रिपु-रारी तो भोलानाथ ही हैं उन का कहना ही क्या है नशे में किसी मोहनीमूर्त्ति पर जो जी चल गया तो यह कुछ कहने योग्य बात नहीं है, पर एक बात तो मैं जरूर पूछूंगी भला भस्मासुर को त्र्यम्बकनाथ ने क्यों मारा था ? इस ठठोली को सुन पर्वतनन्दनी तो मुस्कुरा के चुप हो गईं परन्तु महारानी इन्द्राणी झट से बोल उठीं, बहिन ! जिस बौहरे ने काम को भस्म करके रति को रांड बना दिया उसकी किसी बात का ठिकाना मत समझो, गरज़ इसी प्रकार से हास विलासकी बातें करते २ देवराज की पत्नी ने सबको पान तमाखू दिया।

अब सब देवपत्नी पान तमाखू खा स्वस्थचित्त हो के बैठीं और गाने बजाने की ठहरी तब ही विष्णुप्रिया तुलसी महारानी उठ के देवाङ्गनासमाज में खड़ी होके कहने लगीं। मैं अपनी सब बहिनों से हाथ जोड़ के विनय करती हूं कि मेरे दुःख को सब मिल के दूर करें मैं आज ऐसे कष्ट में हूं कि जिसका वर्णन करना कठिन है। महारानी इन्द्राणी ने गम्भीरभाव से कहा तुलसी तुम अपने सब दुःखों का वर्णन करो हम सब मिल के तुम्हारे दुःखोंको दूर करनेका उपाय करेंगी और जो दुःख हमारी शक्ति से दूर न होगा उसे हम देवराज इन्द्र तथा सर्वकलासम्पन्न विष्णुसे दूरकराने का उद्योग करेंगी

इन्द्राणी के आश्वासन देने पर तुलसी बोलीं. आज कल आप लोगों के भक्त मुझे बड़ा ही कष्ट देते हैं जो लोग सनातन धर्मी कहलाते हैं वह विधवाविवाह का

खण्डन करते हैं इस से मुझे बड़ा कष्ट होता है क्योंकि विष्णु महाराज ने प्रथम मेरे साथ नियोग किया था फिर मैं अपने पति जालन्धर के मरजाने पर विधवा हो गई तबसे विष्णु के भक्त हरसाल मेरा विवाह शालिग्राम के साथ करते हैं, इनसे मेरे वे सब विवाह विधवा विवाह ही की रीति से होते हैं, इस कारण जब कोई हिन्दू पण्डित किसी ठाकुरद्वारे में बैठ के विधवाविवाह या नियोग का खण्डन करता है तब मुझे बड़ा ही क्रोध आता है, मैं सब देवपत्नियों से प्रार्थना करती हूं कि याती हिन्दुओं से विधवाविवाह स्वीकार करायाजाय नहीं तो उनसे कहाजाय कि मुझ विधवा का हरसाल विवाह न किया करें (सब बोल उठीं ठीक कहते हो) दूसरा दुःख मुझे यह है कि विष्णु महाराज के नियोग से और शालिग्राम के विधवाविवाह से जोमेरे अनेक कन्या उत्पन्न हुई हैं उनके विवाह करने की मुझे बड़ी चिन्ता लगी रहती है क्योंकि वे सब अब किशोराव-स्था को लांघ कर युवावस्था को प्राप्त होना चाहती हैं, यदि अब भी उनका विवाह न किया जायगा तो देव-कुल को कलंक लगने का भय है।

महारानी इन्द्राणी श्रीतुलसीदेवी के वचनों को सुन के गम्भीर स्वरसे बोलीं कि इस बातकी चिन्ता मतकरो तुम्हारी पुत्री के वास्ते मैंने उत्तम कुल का सदाचारी और अनिरूपवान् वर ढूँढ रक्खा है वह सर्वदा वेदा-भ्यास और युद्ध करने वाले उत्तम मनुष्योंके पास हीरहता है। इन्द्राणी की बात को सुनके तुलसी देवी बड़ी प्रसन्न

हुईं और कहने लगीं कि उस वर का नाम और कुल भी यदि मुझे मालूम हो जाता तो मैं अधिक प्रसन्न हो के श्रीमती को धन्यवाद देती। इन्द्राणी ने कहा कि वह वर स्वयम् सृष्टिकर्त्ता का पुत्र महर्षियों का साथी और यज्ञ नामी स्त्री का औरस है, आर्य्यावर्त्त में शङ्कराचार्य्य के अतिरिक्त कोई वेद को माननेवाला ऐसा आचार्य्य नहीं हुआ जो उसका विरोधी हो, इसका पवित्र नाम यज्ञोपवीत वा जनेऊ है, तुम इसके साथ बिना विचारे अपनी पुत्री कण्ठी का विवाह करदो।

श्रीमती महारानी इन्द्राणी के प्रस्ताव और तुलसी जी की स्वीकृति एवम् सब देवाङ्गनाओं के अनुमोदन से यह स्थिर हुआ कि कण्ठी का विवाह जनेऊ के साथ किया जाय परन्तु बि . ा वरपक्ष की स्वीकृति से विवाह का होना असम्भव है इसकारण श्री विष्णुप्रिया लक्ष्मी के कहने से देवर्षि नारद को बुलाने का विचार आरम्भ हुआ।

नारद का नाम सुनते ही गन्धर्वराज विश्वावसु की प्यारी भार्य्या बोल उठीं हैं! हैं! मुए मुर्दए का हमारी मण्डली में बुलाना क्योंकर अच्छा समझती हो क्या तुम को पराये मर्द के सामने बतियाते लज्जा नहीं लगती? इनकी बात को सुन के श्रीमती शैलकुमारी मुसुकुराके बोलीं बहिन! नारद जी ऊर्ध्वरेता हैं उन के सामने बोलने बतियाने में हमको कुछ दोष नहीं है खास कर सब देवताओं के विशेष समाचार यही ले आते हैं मेरे विवाह के समय भी यह सर्वत्र आते जाते थे।

श्रीमती विष्णुप्रिया ने हंसकर कहा हां जी। नारद जी तो देवताओं के खास नाऊ हैं और ऊर्ध्वरेता तो वे ऐसे हैं कि राजा सञ्जय की पुत्री दमयन्ती के घर में कई वर्ष तक बन्दर बन के रहे थे (देखो देवी भागवत)

महाराणी इन्द्राणी बोलीं देखो? बहिन! यह ठठोली का समय नहीं है यदि वरपक्ष वाले इस संबंध को स्वीकार करलें तो शुक्राचार्य्य को बुला के झटपट विवाह का दिन और मुहूर्त स्थिर करके विवाह की सामग्री इकट्ठी की जाय, अन्त में सबकी यह सम्मति ठहरी कि सरस्वती जी देवर्षि नारद की हमपेशा हैं इस कारण वही नारद का आह्वान करें सरस्वती जी ने भी सबकी सम्मति को स्वीकार करके और वीना हाथ में लेके एक वेदमन्त्र का अलापना आरम्भ किया उस मन्त्र के गाते ही गाते श्रीदेवर्षि नारदजी देवाङ्गनासमाज में आ उपस्थित हुए, उनको आते हुए देखकर सब देवाङ्गना खड़ी होगईं और यथायोग्य अर्घ्य पाद्य देकर स्वच्छासन पर बिठलाया।

देवर्षि सब की ओर को सौम्यभाव से देखकर बोले क्यों यजमानियो आज क्या बात है जो सब इकट्ठी हो रही हो क्या विष्णु महाराज कोई नया अवतार ग्रहण करेंगे? वा देवराज इन्द्र पर कोई आपत्ति आई है? वा भोलानाथ भंग का गोला खा के मतवाले तो नहीं हो गये हैं? ठीक बतलाओ आज तुम सब क्यों इकट्ठी हो रही हो?

देवर्षि नारद की बातको सुन के महाराणी इन्द्राणी हाथ जोड़ के बोलीं, देवर्षे ? यह कोई बात नहीं है, हम सबने आप को इस वास्ते बुलाया है कि आप एक कन्या की पक्की बात कर आवें।

नारद ने पूंछा यह कन्या किसकी है और किस के साथ उसके विवाह की बात करनी होगी। महाराणी इन्द्राणी ने विनीतभाव से उत्तर दिया कि वह कन्या तुलसी की है और उस के पिता का नाम आप जानते ही हैं।

इस बात को सुन के नारद कुछ चकित हुए और नाक भौंह चढ़ा के कहनेलगे कि ऐसी कन्याके विवाह का उद्योग मैं कदापि नहीं करूंगा श्रीविष्णुप्रिया लक्ष्मी मुसुकुराके कहने लगीं, महाशय आज कल इएटरनैशनेलमैरेज (वर्णान्तरविवाह) जारी होगया है फिर आप हिचर मिचर क्यों करते हैं आइये विवाह की बातें पक्की कीजिये नारद बोले कि मैं कदापि इस विवाह की बातें न करूंगा क्योंकि प्रथम तो कन्या ही नियोग से उत्पन्न हुई है दूसरे उस की माता के देवाङ्गना होने में अभी तक बहुतों को सन्देह है।

सब देवाङ्गनाओं ने देवर्षि नारदके वचनों को सुन कर बड़ी विनय और नम्रता के साथ कहा कि देवर्षे ! इसविवाह के वास्ते हम सब आप से विनय करती हैं कृपासागर ! आप अवश्य इसकार्य्य को कीजिये। खैर किसी प्रकार से नारद ने स्वीकार किया और रोली अक्षत लेके टीका चढ़ाने को चले। नारद मार्गमें विचार

करने लगे कि तुलसीदेवी विष्णु की प्यारी हैं और यह कन्या भी उन की ही विशेष कृपा से उत्पन्न हुई है प्रत्यक्ष देख पड़ता है कि विष्णु भक्तों के सम्प्रदायों ही कण्ठी को अपने गले में बांधते हैं, इस कारण विष्णु भगवान् तो वर के पिता नहीं ज्ञात होते हैं, भङ्गड़ी भोलानाथ ऐसे झगड़ों से कुछ सम्बन्ध ही नहीं रखते हैं इस कारण चौमुखे बाबा के ही घर चल के इस टीके टुन टुन के बखेड़े को मिटाना चाहिये।

नारद महाराज बीन बजाते और रङ्गविरङ्ग कजरी गाते (क्योंकि आजकल स्वर्ग में कजरी बहुत गाई जाती है) अनेक लोक लोकान्तरों को देखते भालते ब्रह्मलोक में आ उपस्थित हुए। देवर्षि नारद को आते हुए देख कर प्रजापति ब्रह्मा अपने सभासदों के सहित खड़े हो गये और यथायोग्य ख़ातिर तवाजा करने के अनन्तर सब अपने अपने आसनों पर बैठ गये, प्रजापति ब्रह्मा का इशारा पाके महर्षि वसिष्ठ ने देवर्षि नारद से पूछा कहिये भगवन्! आज किधर भूल पड़े? सब लोक लोकान्तरों में कुशल तो है मर्त्यलोक में कोई राजा दैत्य वा दानव तो नहीं होगया जो संसार को उद्वेग पहुंचाता हो? कहिये किस उद्देश्य से आप ने दर्शन दिये हैं? महर्षि वसिष्ठ के वचनों को सुन के देवर्षि नारद ने बड़े विनीतभावसे कहा कि यह कोई बात नहीं है संसार का कुशल मङ्गल तो आप इस से ही जान सकते हैं कि एक रुपये के ১८ सेर गेहूं बिक रहे हैं और धर्म कर्म का यह हाल है कि यह धूम के

बहुत से इञ्जिनों में झोंके गये पत्थर के कोयले के धुवें से स्वर्गवासियों की नाक में नकचूहे भर गये हैं, परन्तु आज मैं इस वास्ते नहीं आया हूं कि गोवध के निवारणार्थ विष्णुभगवान् से अवतार धारण करने को कहूं या आप लोगों में से किसी को गोपी और किसी को गाय बनने का कष्ट दूं मैं आज एक छोटे से कार्य के वास्ते यहां उपस्थित हुआ हूं यदि आप लोग इसकार्य को सम्पन्न करेंगे तो केवल मैंही सन्तुष्ट न होऊंगा वरन देवतों की सब स्त्रियां चौमुखे बाबा की मानता मानेंगी यह कार्य्य भी कुछ बड़ा भारी नहीं है केवल यही है कि प्रजापति ब्रह्मा जी के योग्य पुत्र यज्ञोपवीत का विवाह तुलसीपुत्री कुमारी कण्ठीकेसाथ होजानाचाहिये

देवर्षि नारद के इस प्रस्ताव को सुनते ही सब सभासद् कुछ क्रोध के साथ बोले, महाराज। आप का यह प्रस्ताव असङ्गत है क्योंकि तुलसी जलन्धर राक्षस की विधवास्त्री है उसकी भियोगजा कन्या का विवाह देवकुल में क्योंकर हो सकता है? क्या हम लोग ऐसे पतित हैं जो कण्ठी के साथ ब्रह्मा के पुत्र का विवाह होने देंगे विशेषतः कण्ठी के प्रचारक और सहायक सब शूद्र हैं, जब कि धर्मसभावालों का पक्ष है कि शूद्रों को वेद सुनने का अधिकार नहीं है तब कौन ऐसा ब्राह्मणहै जो कण्ठीका विवाह कराने में आचार्य बनेगा।

देवर्षि नारदने विनीतभाव से कहा कि आप का कहना पुराणों के विरुद्ध है इसकारण माननीय नहीं है क्योंकि पुराणोंमें इण्टरनैशनेलमैरेज़ (वर्णान्तरविवाह)

करना लिखा हुआ है और कितने ही विवाह ऐसे हुए भी हैं कहिये तो च्यवनऋषि का विवाह कौनसे ब्राह्मण की कन्या से हुआ था, फिर मत्स्योदरी कौन से क्षत्रिय कुल की कन्या थी जिसे वैयाघ्रपाद गोत्र के महाराज शन्तनु विवाह करके लेगये थे ? इसके अतिरिक्त महर्षि पुलस्त्य भी तो ब्रह्मा के ही औरस पुत्र थे जिन्होंने राक्षसी से विवाह किया था परन्तु आश्चर्य की बात है कि इस विवाह में आप लोग जाति का विचार करते हैं और अपनी परम्परा को नहीं देखते हैं। भला यह तो कहिये कि जिन विष्णु ने स्वयम् तुलसी से नियोग किया था उनको भी आप लोगों ने जाति से पतित किया था नहीं ? अब कृपानाथ। अधिक मत कहलाइये और विवाह करना स्वीकार कीजिये नहीं तो देवतों में तिफर्का पड़ जायगा लीजिये मैं टीके का सामान लाया हूं नारद के और वसिष्ठ के वाद प्रतिवाद को सुनके ब्रह्मा महाराज़ बहुत हंसे और गम्भीर स्वर से बोले भाई ! यह नारद है इनसे जीतना बड़ा कठिन है सब से उत्तम यही है कि टीका ले लिया जाय और विवाह की तैयारी कीजाय।

ब्रह्मा महाराज के अनुमोदन करने से वसिष्ठादि सम्पूर्ण महाशय चुप हो गये और सब सभासदों ने देवर्षि नारद से कहा कि आप तिलक को सब सामग्री निकालिये और वर को देख भाल के तिलक चढ़ा दीजिये पीछे जो होगा देखा जायगा।

देवर्षि नारद ने कहा कि वर के घर बार को लीपने पोतने की आज्ञा दी जाय, और ब्रह्माजी ने तिलक लेने के वास्ते महासभा करने की आज्ञा दी, वायु देव तथा तड़ित देवी को आज्ञा दी कि तुम दोनों स्वर्ग मर्त्य पाताल तीनों लोकों से वर पक्ष वाले मनुष्य, देव, गन्धर्व यक्ष किन्नर और पातालवासियों को बुलाके लाओ। ब्रह्मा महाराज की आज्ञा पाते ही वायु देव और तड़ित् देवी अपने २ कार्य्य करने को चल दिये और बातकी बातमें सबको ब्रह्मलोकमें ला बिठाया, सबके एकत्रित हो जाने और अनुमोदन करने पर तिलक चढ़ाया गया। इस महोत्सव में जो २ विशेष बातें हुईं वे २ पाठकों को किसी और अवसरपर सुनाई जायगी।

देवर्षि नारद तिलक चढ़ा के फिर अमरावती को लौट गये और पूर्व कथित देवाङ्गना समाज को सब समाचार कह सुनाये, विवाह की स्वीकृति को सुनके देवाङ्गना समाज बहुत ही सन्तुष्ट हुआ अनन्तर सबने देवर्षि को धन्यवाद देके तुलसी देवी से कहा कि अब तुम अपने घर जाके विवाह का सरञ्जाम एकत्रित करो। तुलसी देवाङ्गनाओं की आज्ञा पाकर और सब को निमन्त्रण देके अपने घर को चली गई।

तुलसी ने घर पर जाके समस्त कण्ठी-धारियों को बुलाया और सबको यथायोग्य काम सौंप दिये वल्लभीय सम्प्रदाय वालों को भोजन बनाने के निमित्त हलवाई खाने में भेजा गया, माध्व सम्प्रदायियों को आज्ञा दी गई कि तुम बाज़ार की सामग्री लाके हलवाईखानेमें पहुंचाते रहो निम्बार्की लोग लकड़ीघर ने

पर खड़े कर दिये गये, चैतन्य सम्प्रदाय के बंगालियों को तर्कारी बनाने का काम सौंपा गया, परन्तु बड़ी डाटके साथ कह दिया गया कि खबरदार मछली रसोई में न आने पावे नहीं तो वैष्णव सम्प्रदाय से निकाल दिये जाओगे, सैन भगत को आज्ञा दी गई कि तुम शंखना के साथ पतरी दौने तैयार करो, भक्त सधना को हुकुम मिला कि तुम बागान के बैलों के निमित्त भूसा इकट्ठा करो; छीपा पीपाको थोड़े से कपड़े छापने को दिये गये और रैदास भक्त से जूते बनाने को कहा गया एवम् कबीरदास से कहा गया कि बरातियों को देने के वास्ते थोड़ी गजी और दस बीस थान गाढ़े के बुन के तैयार करो, पानपदास तथा उनके अनुयाइयों को आज्ञा मिली कि तुम इतने पाटे तैयार करो जिनपर बराती बैठ कर भोजन कर सकें। इस प्रकार से सबको विवाह के काम सौंप कर तुलसी ने नरसी शाह को और मीराबाई को बुलवाया, उन दोनोंके आजाने पर तुलसीजी ने नरसी शाह से कहा कि सेठजी लड़की का विवाह बड़े घर में ठहरा है ज़रा रुपये पैसे की मदद रखना, नरसी जी ने "भाव भला मफ़ा बहुत (से) बैठे गद्दीदार थे धड़ा लगाये जाओ,, (तक) हुण्डी पढ़ के कहा महाराणी इस वर्ष तो कलकत्ते की टकसालबन्द था तो रुपैयान को बड़ी भारी टानी है; जो मर्ज़ी होय तो बड़ौदे से नये पैसे मंगा दूं, तुलसी जी ने कहा कि उन के वास्ते चिन्ता मत करो ठक्कुरपुर के बस्वामी नाराणिये आप ही उन पैसों को ले

अ वेंगे परन्तु तुम जो इस वक्त कुछ सहायता न करोगे तो याद रक्खो तुम से कण्ठी छीन ली जायगी तब तो सेठ जी बड़े घबड़ाये और कहने लगे कि अच्छा मैं विलायत से कुछ पौण्ड और शिलिङ्ग पेन्स आदि आके श्रीमती के अर्पण करूंगा, लीजिये मैं अभी प्रिन्स रण-जीतसिंह जी को लिखता हूं कि फौरन स्वर्गीय डांक द्वारा उक्त सिक्के भेजदें। इस के पश्चात् मीराबाई से कहाकि तुम सब देवाङ्गनाओं को यथायोग्य आदर-पूर्वक बिठला के गाने बजाने का ठीक प्रबन्ध रखना, हां हां एक प्रबन्ध तो भूल ही गई देखो घर बार में सफाई रखने के वास्ते षट्कोपदास के अनुयायी जो रामानुजी कहलाते हैं उनको नियुक्त करना चाहिये और राधास्वामी तथा वृन्दावनके मार्गवालों को इधर उधर खबर पहुंचाने के वास्ते हलकारे नियत रखना चाहिये जिस से सब प्रबन्ध ठीक रहे परन्तु इन में से कोई भी भोजन की ओर न जाने पावें क्योंकि हम को कई एक पर उच्छिष्ट भोजी होने का सन्देह है।

देखो यह भी ख्याल रखना कि बागान में यदि ईसमसीह और महम्मद आदि आजायें तो उनका आदर सत्कार करने तथा उनके खान पान का प्रबन्ध करने के वास्ते कुण्डापन्थी और बीजमार्गी नियुक्त रहें और समस्त वाममार्गियों को खान पान की सामग्री में नियुक्त कर दिया जाय खबरदार मेरे कहे हुए किसी प्रबन्ध में त्रुटि वा असावधानी न हो, नहीं तो तीनों लोक में बदनामी होगी।

ब्रह्मा महाराज ने यथासमय आने के वास्ते सब

देवतों के पास निमन्त्रण पत्र भेज ही दिये थे वे सब अपने २ विमानों पर तथा अन्यान्य यानों पर बैठ के ब्रह्मलोक में पहुंचे और वहां से धूमधाम के साथ बरात सजाई गई, सब से आगे भोलानाथ महादेव का हूंडा बैल मोहरे पट्टे से दुरुस्त हो के चला, उन के पीछे विष्णु भगवान् का गरुड़ पूंछ हिलाता और पंखों को फटकारता हुआ चला, महादेव के आभूषण सर्पराज गरुड़ को देख के कुछ सकुचाये परन्तु देवी के सिंह को देख के फिर कुछ शांत हुए, श्रीगणेशजी के चूहेराम विनायक महाराज की इस थोंद से ऐसे दबे हुए चले जाते थे मानो बिल से इनकी गर्दन अभीतक दबी हुई है, यमराज का भैंसा और शनैश्चर का बकरा एवम् भैरोंजी का कुत्ता बरात की शोभा को द्विगुणित किये हुये थे कहां तक लिखा जाय यह देवतों की बरात ऐसी ज्ञान पड़ती थी मानो किसीने अजायब घर (अद्भुतालय) की सामग्री इकट्ठा की है।

बारात को आई हुई सुन के श्रीमती तुलसी देवी ने आज्ञा दी कि हमारे शहर से बिल्कुल बिल्ली निकाल दी जायँ क्योंकि बिल्ली को देख के गणेश जी का चूहा गणेश जी के सहित भाग जायगा, फिर तुलसी देवी की आज्ञानुसार श्री गोस्वामी बम्मकलाल जी महाराज भाकरौली वाले, श्री गोस्वामी चिमगूदड़लालजी महाराज वैजनाथ द्वारे वारे, श्री गोस्वामी शिमलालाल जी महाराज लण्डनवाले और राजाधिराज श्री बैल स्वामी हिड़म्बकलाल जी महाराज जर्म्मन वाले, इन के अतिरिक्त श्री प्रसन्न हाबजम्यदास, श्रीमहन्त श्रीस्वामीचरण

क्रमसे रघु धूरदासजी, इनके सिवाय, भिक्कादास छिक्का दास और छिक्कादास आदि आदि बरात की पेशवाई को चले और अगौनी की रीति को समाप्त करके सब कोई यथायोग्य स्थानों में ठहराये गये ।

द्वारपूजा और भोजन के पश्चात् बरातियों का दिल बहलाने के वास्ते नाच रंग की ठहरी देवराज इन्द्र का इशारा पाते ही उर्वशी और घृताची आदि अप्सराओं के वृन्द पेशवाज आदि से सुसज्जित होके नाचने को तैयार हुए और हा हा हू हू आदि गन्धर्व तबले और सारङ्गी के स्वरों को मिला के साज बाज के सहित खड़े हो गये, सब से पहिले उर्वशी की पारी आई, यह देश की ध्वनि में नीचे लिखी (बेतुकी) गज़ल गाने लगी-

अभी फ़ैसला है हमारा तुम्हारा । ज़रा न्याय पर हो इशारा तुम्हारा ॥ चैतन्य ईश्वर को त्यागा है तुमने । जड़ादि की पूजा सहारा तुम्हारा । जीते बुज़ुर्गों को माना न तुम ने । मरे का हुआ श्राद्ध प्यारा तुम्हारा ॥ मन्दिर में आने नचाओ हो वेश्या । यही कर्म भारी नकारा तुम्हारा ॥ पोथी तुम्हारी गपोड़ी भरी है । उन्हें छोड़ने से गुज़ारा तुम्हारा ॥ वेदों को जानो सनातन पियारी । इसी ज्ञान से हो उबारा तुम्हारा ॥ १ ॥

इसके पश्चात्-घृताची उठी और सावनीकी ध्वनि में यह गा के बैठ गई-

जब पाप ताप से हटे तो पानी बरसे (टेक) छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे ॥ जब जगत्

पिता को रटे तो पानी बरसे। तज भोग योग में लटे तो पानी बरसे। जब झपट कपट की कटे तो पानी बरसे अधरम की बदरी फटे तो पानी बरसे॥ जब प्रजा में हो नित यज्ञ तो पानी बरसे। छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे॥ १॥ सब करें हवन शुभ पवन पूर हो जावे। कालिम कोइले का धूम दूर हो जावे॥ दुर्गन्ध अन्धतामिस्र धूर हो जावे। सब रोगों की वह खान चूर हो जावे। सब सुनो दीन जन अन्न बिना नहिं तरसे। छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे॥ २॥ सब सन्यासी हों सत्य मार्ग के गामी। तजि मठों फशे को वेद धर्म्म अनुगामी॥ नहीं रहे ब्रह्मचारी भी लोलुप कामी। वनवासी भी बने नहीं बहुधामी॥ जब वेदों की शुभध्वनी भनी घर घर से। छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे॥ ३॥ जब प्रजा करे सब धर्म्मराज अनुशासन। औ पक्ष नहीं कोई करे बैठ न्यायासन॥ यदि राजा पर दुःख हरे प्रजा आश्वासन। दे सहाय सब विधि उसे बेच के वासन॥ लखि दीन हीन दे छोड़ राज के करसे। छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे॥ ४॥ करि धारण स्त्रीव्रत पुरुष करें सब कामो। सब पतिव्रता बनि जग विचरें बामा॥ यह वेश्या भडुए नशैं मूर्ख देकामा। जग जन मिल नित ही रटैं ईश गुन ग्रामा॥ उपदेश हमारा सुनो छुटों सब डरसे। छल छिद्र छिनाला घटे तो पानी बरसे॥ ५॥

सब लोग इन बेतुकी तानों को सुनके वाह! वाह! करने लगे इसके पश्चात् विवाह का लगन आया और सब लोग अपने २ कामोंको करनेके वास्ते महफिलसे उठे।

सबको सभा से उठते देखकर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द यशोदानन्दवर्द्धन बोले कि आप लोग क्षणमात्र और ठहरिये कि जिससे रासलीला भी होजाय क्योंकि फिर आपलोगोंको रास देखनेका ऐसा अवसर न मिलेगा

श्री गोपीजनवल्लभ की आज्ञा पाते ही श्री गोस्वामी चित्रकूटलाल पचरौली वाले और श्रीबकरी स्वामी जगहरण लाल जी सिंहद्वार वाले राधा और कृष्णकी सूरत बनके नेपथ्य में आखड़े हुए और छिमटा नाचने लगे, इस अद्भुतलीला को देखकर भोलानाथ महादेवजी क्रोध के साथ बोले कि यदि हमारे भक्त हमारा ऐसा उपहास करते तो हम तीसरा नेत्र खोलके उन्हें भस्म कर देते, इनकी बातको सुन के श्री देवराज इन्द्र ने मुसकुरा के कहा भाई! विष्णु की लीला अपार है इनको अपनी इज्जत का कुछ भी ख्याल नहीं रहता क्योंकि वह स्वयम् ही भिखारी (बावन) का रूप धारण करके मांगने चले गये थे, विष्णु ने हंस के कहा कि हां भाई हम तो ऐसे ही हैं परन्तु आप लोग यह नहीं जानते कि जो लोग हमारी और हमारी स्त्रियों की नकल करते हैं उनको हम घोर नरक में डाल के कठोर दण्ड देते हैं।

इसके अनन्तर कन्या पक्ष के नाऊ सैन भक्त ने जनवासमें आके,कहा कि विवाहका लग्न समीप आगया सुतराम् नाच मुजरे को बंद करके आप सब लोग

मण्डप में पधारें, इस वचन को सुनते ही चौमुखे बाबा की आज्ञानुसार नाचसभा का विसर्जन किया गया और सब देवता तुलसी मन्दिर में जाके उपस्थित हुए, जब सब देवता यथास्थान बैठगये तब देवतों के पुरोहित श्रीबृहस्पति जी ने विवाह कार्य्य आरम्भ किया।

कलश स्थापन के अनन्तर ज्यों ही वरुण देवता का उसमें आवाहन किया त्यों ही झट से वरुण देवता उठे और उसघड़े में घुसने लगे परन्तु पैर के लगते ही घड़ा फूट गया और सब पानी बहगया तब तो सब देवतों ने बृहस्पति की हंसी आरम्भ की किसी ने कहा कहिये भगवन्! इस छोटे से घड़े में ३॥ हाथ के वरुण का आवाहन क्यों करते थे, आपने क्या घड़े को मदिरा का पीपा समझा था? किसी ने कहा हां हां! इस ही बुद्धि के बल से गुरुजी! तारा देवी को तारना चाहते थे खैर! देवगुरु बृहस्पति कुछ लज्जित हुए और मिट्टी के एक ढेले में लाल डोरा लपेट के मण्डल के बीच में रक्खा और उसमें गणेश का आवाहन करने लगे इस को देख के गणेशजी ने अपनी सूंड़ को बढ़ा के मट्टी के ढेले को उठा के फेंक दिया और हँस के कहा कि भगवन्! मेरे एक पैरके बोझको भी यह मट्टी नहीं सभाल सकी तो मैं इसमें क्योंकर आसक्ता हूं, इस बार भी बृहस्पतिजी की खूब हँसी हुई।

नवग्रहों की पूजा के समय तो यह कहकहे उड़े कि देवगुरु के छक्के छूट गये, प्रथम तो नवग्रहों में से सात ही ग्रह मिले क्योंकि एक तो देवगुरुपूजक के होने के कारण स्वयम् ही पृथक् हो गये, दूसरे कन्या पक्ष के

पुरोहित श्री शुक्राचार्य भी पूज्य ग्रहों में सम्मिलित न होसके, शेष सात ग्रहोंमें से चन्द्रमा महाराजने कहा कि मैं अभी अपनी ड्यूटी(काम)पर हुं और मुझे कोई पत्रभी भी नहीं मिला; इस कारण विवाह में पूजा लेने नहीं आसक्ता हुं, भगवान् भास्कर ने कहला भेजा कि इस समय मेरा दौरा अमेरिका द्वीप में होरहा है, इस के अतिरिक्त जिस लग्न में विवाह स्थिर हुआ है वह लग्न व मुहूर्त्त मेरे आते ही पताल को भाग जायेंगे, इस कारण मैं कण्ठी के विवाह में नहीं आसकता हुं, नव-ग्रहों की इस गड़बड़ी को देखकर तुलसी देवी को बड़ी चिन्ता हुई तब उन्होंने उच्चस्वर से कहा कि यदि नवग्रहों की हाज़िरी ठीक नहीं है तो उन सब की स्त्रियों की ही पूजा करनी चाहिये, तुलसीजी की बात को सुनके चन्द्रमा की स्त्री रोहिणी बोल उठी कि "आप का यह कहना ठीक नहीं, क्योंकि हम सब पतिव्रता हैं इस कारण अपने पतियों को त्याग कर हम पूजा नहीं, करा सक्ती हैं, हम क्या तुलसी के समान हैं जो अपने पति (शालिग्राम) के शिर पर चढ़बैठती हैं" खै. इस ही प्रकारसे पूजा पत्री के बखेड़े में अधिक रात्रि व्यतीत होगई, तब श्रीब्रह्माजीने विभीत भाव से कहा कि यह सब बखेड़े हिन्दुओंके वास्ते हैं अन्यलोगों के वास्ते नहीं तब सिविलाइज़ड (शिक्षित) देवतों के विवाह में यह झगड़ा क्यों डाल रक्खा है ? विवाहके अन्य कार्यों को आरम्भ कीजिये। वरके जन्म समय में जैसे अग्निहोत्रादि हुआ था वैसेही इस समय भी होना

चाहिये, और अग्निहोत्रादि के समाप्त हो जाने पर कन्यादान का समय आया, प्रथम वर पक्ष से रेशम और कलाबत् आदि आभूषण वधू को विभूषित करने के निमित्त भेजे गये और उनसे सुसज्जित हो के जब कन्या मण्डप में आई तब प्रधान २ देवताओं ने उसे आशीर्वाद दिया, प्रथम वर के पिता ब्रह्मा जी ने कहा।

शूद्राणामन्त्यजानाञ्च प्रियाभूयास्सुमण्डिते।
पण्डितैरादृतामाभूर्मौ त्वं तन्तुमण्डिते॥

अर्थ-शूद्र और चमार आदि अन्त्यजों की तू प्यारी हो और ब्राह्मण तेरा आदर न करैं और अच्छे सूत से तू गुथी जाय।

इन के अनन्तर अन्य देवताओं ने भी यथायोग्य आशीर्वाद दिये अनन्तर कन्या के मामा रामानुज, माध्वाचार्य्य और वल्लभाचार्यादिकों ने कन्या को अङ्क में बिठला के विवाह के कर्त्तव्यों को किया, तब देवगुरु बृहस्पति ने शुक्राचार्य्य से कहा कि कन्या के पिता से दान कराइये शुक्राचार्य ने विष्णु भगवान् की ओर इशारा किया, परन्तु विष्णु ने कहा कि यह कन्या मेरी औरस नहीं है इस कारण मैं कन्यादान न लूंगा मेरी समझ में इस का कन्यादान शालिग्राम को ही लेना चाहिये (वा बढ़ई को लेना चाहिये)।

इसके उत्तर में शालिग्राम जी बोले कि मैं भी तो आप का ही रूप हूं, इस कारण आप को ही कन्यादान का लेना उचित है। श्री विष्णु भगवान् ने कहा कि मेरा रूप तुम क्योंकर हो सकते हो, मेरे शरीर में चार हाथ हैं और तुम्हारे एक भी नहीं, मेरे कमल से-

नेत्र और तुम विपट अन्धे, मेरे चरण देखो दोनों विद्यमान हैं और तुम निरे पङ्गु हो तब कहो तुम मेरे रूप क्योंकर हो सकते हो ? इसके अतिरिक्त तुम एक वर्ष में अनेक बार तुलसी के साथ नियोग करते हो तब कन्या दान का करना तुम को ही मुनासिब है, अन्त में शालिग्राम में डोरा लपेट कर कन्यादान पढ़ा गया।

कन्यादान का संकल्प

ओम् विष्णुर्विष्णुर्विष्णु कद्याज्ञानस्य त्रितीय प्रहरार्द्धे प्रज्ञाननांन्तरे, श्वेताङ्गवराह कल्पे ऊनविंशशताब्दि मध्येऽमुक ख ष्टाब्दे दशमचरमासे ज्ञानायपक्षेऽतिथिविरहितायां तिथौ इमाङ्काणुरूपां कलाचरचारित्रविभूषिताम् मतिसूत्रसूत्रेणोतप्रोतां कठोरासौ कन्यां सूत्ररूपाम च्युत गोत्रोत्पन्नायज्ञोपवीतशर्म्मणे वरायाहं सम्प्रददे।

इस कन्यादान के अनन्तर वर वधू में नीचे लिखी प्रतिज्ञा हुई—

वर-जैसे ब्राह्मण के हाथ से बटे पवित्र सूत से मैं बना हूं वैसे मन से मैं तुम्हें कभी नहीं गुथने दूंगा।

२-छत्तानियों के कण्ठ में लगने की यदि तुम चेष्टा करोगी तो मैं तुम्हें त्याग दूंगा।

३ यदि तुम कभी मेरे सूतरूपी परिवार को तोड़ के किसी धातु के तार में गूथी जाओगी तो मैं तुम्हें त्याग दूंगा।

४-जो लोग तुम को धारण करके मद्य मांस का सेवन करेंगे तो मैं तुम को दण्ड दूंगा।

वधू-जो द्विज वेद, यज्ञ और १६ संस्कारों से रहित होंगे उनको शूद्र समझ मैं अपना चेला बना लूंगी, बस फिर उनके पास तुम मत आना।

२-जो द्विजाति किसी चिन्ह से दग्ध होंगे वह मेरे आश्रय समझे जायेंगे।

३-मेरे भाई रुद्राक्ष कमलाक्ष, शंख और महाशंख (हाड़) एवम् मेरी बहिन माला, तुलसी, पुत्र जिवा, पोत पवित्री आदि से तुमको सदा साले और साली का सम्बन्ध और प्रेम रखना होगा।

४-जैसे वेदानुकूल ग्रन्थों में तुम्हारे लेख हैं ऐसे ही लेख अपने खास यजमान ब्राह्मणों से बनवा के मेरे सम्बन्ध में पुराणों में मिलवा देने होंगे यदि यह तुम को स्वीकार हो तो मैं तुम्हारी वामांगी बनूंगी।

वर-अच्छा मैंने स्वीकार किया।

पटपरिवर्त्तन होने के पश्चात् सूत और बन्दी जनों ने मङ्गल पाठ आरम्भ किया।

(१) रहे विलायत जाय, सूत को मिले न लेशा।
मिस्टर बन के छिप विप्र त्यागे निज देशा॥
आजन्म से नहीं बने सूत ब्राह्मण गृह माहीं।
स्वच्छ गेल के कण्ठ बीच उपवीत सुहाहीं॥
मैल छुड़ावन हेतु नित्य साबुन से धोवें।
सबहि दिखावन हेतु जनेऊ पुनि पुनि ओवें॥

अब लालाका आया टीका, घर बाहर सब लागे फीका।
अब लालाका आया लगन, चारों ओरसे लग गई अगन।
अब लालाको चढ़िया तैल, घर में होगई दुःख की रेल।
अब लालाकी चली बरात, को पूछे किस की कुशलात।
अब लालाके फिर गये फेरे, यह घर मरियो और घनेरे।

* इति *